ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–०९
दिनांक- मंगलवार, ३१ जनवरी, २०२३

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 25.1 एवं 10.3 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 99 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 62 प्रतिशत, हवा की औसत गति 1.9 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 2.0 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 5.4 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 14.7 एवं दोपहर में 28.2 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(01–05 फरवरी, 2023)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 01–05 फरवरी, 2023 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ तथा मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान 23 से 26 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 10 से 14 डिग्री सेल्सियस के बीच बने रहने का अनुमान है।
- सतही हवा की रफ्तार थोड़ा ज्यादा रह सकता है यह 9–15 किलोमीटर प्रति घंटा की दर से चल सकती है। हवा की दिशा पछिया रहने की सम्भावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 60 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- शुष्क मौसम की संभावना को देखते हुए किसान हल्दी एवं ओल की तैयार फसलों की खुदाई प्राथमिकता से करें। अगात राई–सरसों की तैयार फसलों की कटाई करें।
- आम एवं लीची में मंजर आने की संभावना को देखते हुए किसान अपने आम एवं लीची के बागानों में किसी भी प्रकार का कर्षण क्रिया नहीं करें। इन बगानों में दीमक, मधुआ एवं दहिया कीटों तथा पौउड्री मिल्डेव रोग की निगरानी करे।
- इस समय आम एवं लीची में मंजर आने की संभावना अधिक रहती है। अतः किसान भाई अपने आम एवं लीची के बागानों में किसी भी प्रकार का कर्षण क्रिया नहीं करें। इन बगानों में जहाँ दीमक की समस्या हो, क्लोरपाईरिफॉस 20 ई0सी0 / 2.5 मी0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर मुख्य तने एवं उसके आस–पास की मिट्टी में छिड़काव करने से दीमक की उग्रता में कमी आती है। मधुआ एवं दहिया कीटों का प्रकोप कम करने के लिए वृक्षों में इमिडाक्लोप्रीड 17.8 एस0एल0 अथवा साइपरमेथ्रीन 10 ई0सी0/1.0 मी0ली0/ली0 पानी की दर से घोल बनाकर समान रुप से छिड़काव करें। घुलनषील गंधक (सल्फर) 80 डब्लू0पी0/ 2 ग्रामध्लीटर पानी की दर से घोल कर पत्तियों पर समान रुप छिड़काव करने से आने वाले समय में पौउड्री मिल्डेव की उग्रता में कमी आती है।
- रबी मक्का की फसल जिसमें धनबाल एवं मोचा आ गई हो, 40 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से करें।
- मक्का की फसल जो 50–60 दिनों की अवस्था में है, उसमें 40 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन कर मिट्टी चढ़ा दें। आलू–मक्का अंतवर्ती खेती से तैयार आलू की निकाई–गुराई करें तथा मक्का में सिंचाई कर 3–4 दिन बाद 40 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर नेत्रजन का उपरिवेषन करे।
- सरसों की फसल में लाही कीड़ों का आक्रमण हो सकता है । बचाव के लिए डाईमेथोएट 30 ई0सी0 दवा का 1.0 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें । विलम्ब से बोई गयी दलहनी फसल में 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव एक सप्ताह के अन्तराल पर दो बार करें।
- बसन्तकालीन ईख की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की तैयारी के वक्त जुताई में 15–20 टन सड़ी हुई गोबर की खाद का व्यवहार करें। यह खाद भुमि की जलधारण क्षमता एवं पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाती है।
- पिछात बोयी गई गेहूँ की फसल में जिंक की कमी के लक्षण (गेहूँ के पौधों का रंग हल्का पीला हो जाना) दिखाई दें रहें हो तो 2.5 किलोग्राम जिंक सल्फेट, 1. 25 किलोग्राम बुझा हुआ चुना एवं 12.5 किलोग्राम युरिया को 500 लिटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से 15 दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव आसमान साफ रहने पर करें। दीमक कीट का प्रकोप फसल में दिखाई देने पर बचाव हेतु क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20–30 किलो बालू में मिलाकर खड़ी फसलों में समान रूप से व्यवहार करें।
- अरहर की फसल में फल मक्खी कीट की निगराणी करे। इस कीट के मैगट बीजों को खाते है। जिस स्थानों पर मैगट खातें है, वहॉ कवक एवं जीवाणु उत्पन हो जाते है। फलस्वरूप ऐसे दाने खाने योग्य नही रह जाते है और उपज में काफी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए करताप हाईड्रोक्लोराइड दवा 1.5 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।
- आलू की अगात प्रभेद की तैयार फसलों की खुदाई करें। बीज वाली फसल की ऊपरी लत्ती की कटाई कर लें तथा खुदाई के 15 दिनों पूर्व सिंचाई बन्द कर दें। पिछात आलू की फसल में कटवर्म या कजरा पिल्लू की निगराणी करें।
- मटर में फली छेदक कीट की निगराणी करें। इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनूमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेश कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानो को खाती रहती हैं। एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है। अक्रान्त फलियॉ खाने योग्य नही रह जाती, जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है। कीट प्रबन्धन हेतु प्रकाश फंदा का उपयोग करें। 15–20 टी आकार का पंछी वैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टर लगावे। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास 25 ई0 सी0 या नोवाल्युरॉन 10 ई0 सी0 का 1 मि0 ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
- सब्जियों में निकाई–गुड़ाई एवं आवष्यकतानुसार सिंचाई करें। गरमा मौसम की सब्जियों की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्रा पुरे खेत में अच्छी प्रकार विखेरकर मिला दें। कजरा (कटुआ) पिल्लू से होने वाले नुकसान से बचाव हेतु खेत की जुताई में क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20–30 किलो बालू में मिलाकर व्यवहार करें।

आज का अधिकतम तापमानः 25.8 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.9 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 14.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 5.2 डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी (कृषि मौसम)

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)